मण्ढा सूतन की बखत भई ओ नारी मँझारी / पँवारी

मण्ढा सूतन की बखत भई ओ नारी मँझारी।
सवास्या कोनऽ देव ओ नारी मँझारी।
सवास्या गोरे देव ओ नारी मँझारी।
सवासिन कोनऽ बाई ओ नारी मँझारी।
सवासिन हीराबाई ओ, नारी मँझारी।
आरू सवास्या कौन देव ओ, नारी मँझारी।
आरू सवास्या नारायण देव ओ, नारी मँझारी।
आरू सवासिन कौनऽ बाई ओ, नारी मँझारी।
आरू सवासिन जयश्री बाई ओ, नारी मँझारी।

पँवारी लोकगीत- मण्ढा सूतन की बखत भई ओ नारी मँझारी / पँवारी

यह पँवारी लोकगीत मण्ढा सुतते समय गाया जाता है

पँवारी/भोयरी- यह मालवी की एक बोली है जो बैतूल छिंदवाड़ा वर्धा के पंवारो/भोयर द्वारा बोली जाती है जिसके कारण इस बोली का नाम भोयरी पड़ा ,

पँवार बैतूल छिंदवाड़ा- छिंदवाड़ा में निवासरत पंवार सदियों पहले करीब 13वी सदी में धार मालवा से सतपुड़ा में आ बसे। बैतूल छिंदवाड़ा के पंवार अग्निवंशी जो मूल रूप से उज्जैन परमार की शाखा से हैं जिनकी उत्तप्ति आबू पर्वत से हुई है, बैतूल छिंदवाड़ा वर्धा पंवारो को पवार/भोयर/ भोयर-पवार आदि नाम से जाना जाता है